International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.newresearchjournal.com/multieducation
Volume 1; Issue 3; May 2016; Page No. 53-54

वेदांत दर्शन के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों का परिचय

डॉ अखिल सिंह

सहायक महाप्रबंधक . प्रशासन विक्रांत सेफ गार्ड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नॉएडा

शोधपत्रसारः
स्वामी विवेकानंद के पूर्व सामान्यतः जनसमुदाय में यह धारणा व्याप्त थी कि वेदांत आदि विषयों का सामान्य मनुष्यों से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वेदांत का सम्बन्ध या तो गेरूए वस्त्रधारी संन्यासियों के लिए है या फिर केवल उन बुद्धिजीवियों के लिए है जोकि दार्शनिक विद्वान हैं। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि जीव ही शिव है। अर्थात् मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची भक्ति है। वह आदर्श और व्यवहार के, सिद्धान्त और आचरण के भय की दीवार को तोड़ने वाले वे प्रथम कर्मयोगी थे। उन्होंने यह उद्घोष किया कि ''जो दर्शन मनुष्य के दैनिक जीवन की समस्याओं को हल नहीं करता और जो धर्म मनुष्य की सामान्य उलझनों को भी नहीं सुलझा सकता, ऐसा दर्शन और धर्म आज के युग के लिए अनुपयोगी और निरर्थक है। स्वामी विवेकानंद ने धर्म की विवेचना करते हुए मानव सेवा को केन्द्र में रखकर जिस जीवन शैली की कल्पना की वह नैतिकता के तंत्र की स्थापना का आधार है। व्यावहारिक वेदांत मूलभूत ऐक्य में मानव मस्तिष्क में आदर्श जीवन, प्रकृति और लौकिक भावना की गहरी समझ विकसित करता है।

मूलशब्दः वेदांत दर्शन, स्वामी विवेकानंद, जनसमुदाय

प्रस्तावना

सामान्यतः जनसमुदाय में यह धारणा व्याप्त है कि वेदांत आदि विषयों का सामान्य मनुष्यों से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वेदांत या तो अरण्यों और गुफाओं में घूमने व रहने वाले गेरूए वस्त्रधारी संन्यासियों के लिए है या फिर केवल उन बुद्धिजीवियों के लिए है जोकि दार्शनिक विद्वान हैं। स्वामी विवेकानंद ने धर्म की विवेचना करते हुए मानव सेवा को केन्द्र में रखकर जिस जीवन शैली की कल्पना की, वही नैतिकता के इस तंत्र की स्थापना का आधार है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि जीव ही शिव है। अर्थात् मानव सेवा ही ईश्वर भक्ति है। उनके आदर्शों का मूल आधार व्यावहारिक वेदांत यह है कि अगर कोई व्यक्ति किसी बीमार, गरीब या मुसीबत के मारे की सेवा करे तो यह ईश्वर की भक्ति का सर्वोच्च रूप होगा।

स्वामी विवेकानंद के दर्शन की एक अन्य विशेषता यह भी है कि स्वामी जी ने वेदांत नामक फल को साधु–संन्यासियों और बुद्धिवादियों के हाथों से लेकर आम जन तक पहुँचाया। वह वेदान्त सिद्धान्तों को आसमान से जमीन पर उतार देने वाले प्रथम युग पुरुष थे। आदर्श और व्यवहार के, सिद्धान्त और आचरण के भय की दीवार को तोड़ने वाले वे प्रथम कर्मयोगी थे। उन्होंने यह उद्घोष किया कि ''जो दर्शन मनुष्य के दैनिक जीवन की समस्याओं को हल नहीं करता और जो धर्म मनुष्य की सामान्य उलझनों को भी नहीं सुलझा सकता, ऐसा दर्शन और धर्म आज के युग के लिए अनुपयोगी और निरर्थक है।'' [1] आज आवश्यकता सिद्धान्तों को व्यवहार में उतार लेने की है, अध्यात्म और व्यवहार के बीच के भेद को दूर करने की है। ''यदि उसको कार्यरूप में परिणत नहीं किया जा सकता तो बुद्धि विलास के अतिरिक्त उसका कोई मूल्य नहीं है।'' [2]

आज के युग में बौद्धिक परिचर्चाओं को अनावश्यक बतलाते हुए स्वामी जी ने कहा कि– ''ये न्याय के कूट विचार, दार्शनिक मीमांसाएँ, ये सब मतवाद और क्रियाकाण्ड इन सभी ने किसी समय भले ही समाज का हित किया हो किन्तु आइए हम आज से इसी क्षण से धर्म को सरल और सहज बनाने की चेष्टा करे।'' [3] आज वेदान्त को धर्म के समान मनुष्य–जीवन की समस्याओं को सुलझाना पड़ेगा, उसे व्यावहारिक बनाना पड़ेगा।'' [4] व्यावहारिक बनने के लिए वेदान्त को साधु–संन्यासियों के और कुछ मतवादियों के हाथों में ही सिमट कर नहीं रह जाना होगा, उसे साधारण मनुष्य के जीवन से भी सम्बद्ध होना होगा।

''वेदान्त के ये सब महान् तत्व केवल अरण्य में तथा गिरि–गुहाओं में आबद्ध नहीं रहेंगे। विचारालयों में, प्रार्थना–मन्दिरों में, दरिद्रों की कुटी में, मत्स्यजीवियों के गृह में, छात्रों के अध्ययन स्थलों में सर्वत्र ही इन तत्वों की आलोचना होगी और ये काम में लाये जायेंगे।'' [5] ''प्रत्येक व्यक्ति में, चाहे वह कोई भी काम करे और चाहे वह किसी अवस्था में हो, वेदान्त का विस्तार हो जाना आवश्यक है।'' [6]

वेदांत के आदर्शों को साधारण लोग भी किस प्रकार से ग्रहण कर सकते हैं, इसका सीधा–सादा उपाय बताते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि ''तुम निष्कपट भाव से जो कुछ करते हो, तुम्हारे लिए वही अच्छा है। अत्यंत छोटा कर्म भी यदि निष्कपट भाव से किया जाए तो उससे अद्भुत फल की प्राप्ति होगी।'' [7]

''मत्स्यजीवी भी यदि अपने को आत्मा कहकर चिन्तन करेगा तो वह एक उत्तम मत्स्यजीवी होगा। विद्यार्थी और वकील अपने को आत्मा समझकर चिन्तन करें तो वे अपने कार्य उत्तम रीतियों से कर सकेंगे।'' [8] स्वामी विवेकानंद कहते हैं ''वेदांत किसी भी ऐसे आदर्श का उपदेश नहीं देता जो अज्ञेय और अव्यावहारिक हो इसलिए वेदांत इतना सर्वजन सुलभ और सर्वजन ग्राह्य है।'' [9]

''वेदांत के नीति शास्त्र का आधारभूत तत्व आत्मा है। इस आत्म तत्व को प्रत्येक व्यक्ति इस जीवन में प्रत्यक्ष कर सकता है। इस विषय में स्त्री–पुरुष का भेद नहीं है, जाति और धर्म का भेद नहीं है। बाल, वृद्ध जाति, धर्म आदि के भेद के बिना ही इस सत्य की उपलब्धि की जा सकती है।'' [10] ''क्योंकि वेदांत का यह सन्देश है कि सत्य का अनुभव और साक्षात्कार नहीं करना है, वह सदा से अनुभूत और प्राप्त तत्व है।'' [11] ''वेदांत का आदर्श सब वस्तुओं से अधिक ज्ञात है।'' [12]

आत्मा के द्वारा ही सब वस्तुओं का ज्ञान होता है। किसी भी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करने से ''मैं'' का ज्ञान होता है, तत्पश्चात् उस वस्तु का। अतः यह सिद्ध है कि आत्मा के द्वारा ही वस्तु ज्ञान होता है। इसलिए आत्मा को अज्ञात कहना प्रलाप है।'' [13] जो तत्व सब वस्तुओं से अधिक सत्य है और जो तत्व सर्वत्र और सब प्राणियों में विद्यमान है उससे भी अधिक प्रत्यक्ष और ज्ञात कौन सा तत्व हो सकता है।'' [14] अतः ''इस प्रकार के वेदान्तीय आदर्श को हमारे दैनिक जीवन में, नागरिक जीवन में, घरेलू जीवन में और सब अवस्थाओं में, आचरण में परिणत किया जा सकता है।'' [15]

वेदांत की व्यावहारिकता का एक कारण यह भी है कि वेदांत के आदर्श को नगरों के कोलाहल के बीच भी प्राप्त किया जा सकता है। ''वेदांत गृहस्थादि धर्मानुकूल आचरण को छोड़ने का उपदेश नहीं देता क्योंकि वेदान्त केवल जंगलों और गुफाओं की ही चीज नहीं है।'' [16] स्वामी विवेकानन्द आगे कहते हैं कि ''वेदांत कर्मण्यता को छोड़ने का आदेश कभी नहीं देता उसका उद्देश्य तो कर्म में रहकर अकर्म की स्थिति को प्राप्त करना है।'' [17] इस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने जहाँ वेदांत से बौद्धिकता की कठोरता को हटाकर उसे जनजीवन से सम्बद्ध करने का प्रयत्न किया, वहीं उन्होंने आम जन को भी वेदांत के आदर्शों के अनुसार ही अपने जीवन को बनाने की प्रेरणा दी और स्वामी विवेकानन्द को यह प्रेरणा गीता से मिली।[18]

''भारत के आदर्श हैं – त्याग और सेवा। उसकी इन धाराओं में गति लाइये और बाकी सब कुछ अपने आप ही ठीक हो जायेगा। इस देश में आध्यात्मिकता का झण्डा चाहे जितना भी ऊँचा क्यों न उठाया जाए, वह पर्याप्त नहीं होता। और केवल इसी में भारत का उद्धार है।'' [19]

''प्रत्येक जाति या राष्ट्र का किसी–न–किसी तरफ विशेष झुकाव हुआ करता है। प्रत्येक जाति का एक–एक विशेष जीवनोद्देश्य भी होता है। प्रत्येक जाति को समस्त मानव जाति के जीवन को सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए किसी व्रत विशेष का पालन करना पड़ता है। अपने व्रतविशेष को पूर्णतः सम्पन्न करने के लिए मानो प्रत्येक जाति को उसका उद्यापन करना ही पड़ेगा। राजनीतिक श्रेष्ठता या सामरिक शक्ति प्राप्त करना किसी काल में हमारी जाति का जीवनोद्देश्य न कभी रहा है, न इस समय है और याद रखो न आगे कभी होगा। हाँ, हमारा दूसरा ही राष्ट्रीय जीवनोद्देश्य रहा है और वह यह है कि समग्र राष्ट्र की आध्यात्मिक शक्ति को माना किसी डायनेमो में संग्रहीत संरक्षित तथा नियोजित किया गया हो, और कभी मौका आने पर वह संचित शक्ति जल–प्लावन के समान सम्पूर्ण पृथ्वी को बहा देगी।'' [20]

स्वामी विवेकानंद नैतिकता के उच्चतम आदर्शों में धर्म को स्थान देते हैं। वे इसका उत्कर्ष नैतिक बल में देखते हैं, जो गरीबों, रोगियों और जरूरतमंदों की सेवा के लिए प्रेरणादायी है और ऐसे करूणामयी मानव के सृजन में सहायक हैं जो तमाम जीव–जन्तुओं के प्रति दया और प्रेम से सराबोर हों। स्वामी विवेकानंद ने धर्म की विवेचना करते हुए मानव सेवा को केन्द्र में रखकर जिस जीवन शैली की कल्पना की वह नैतिकता के तंत्र की स्थापना का आधार है।

स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित व्यावहारिक वेदांत हमारे युग की वैज्ञानिक अवधारणा के भी अनुरूप है। यह तार्किकता को बढ़ाता है, आत्म विश्वास का संचार करता है और भाग्यवाद को घुड़कता है। एक स्थान पर यह बिल्कुल स्पष्ट भी है, ''प्राचीन धर्म ने कहा था कि जो भगवान पर यकीन नहीं करता वह नास्तिक है। नया धर्म कहता है कि जो अपने आप में विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है। जो भाग्य का रोना रोते हैं, वे कायर और मूर्ख हैं। मजबूत व्यक्ति तो वह है जो खड़े होकर कहता है कि मैं अपना भाग्य खुद ही लिखूंगा।

व्यावहारिक वेदांत मूलभूत ऐक्य में हमारे विश्वास को प्रगाढ़ करता है। यह सम्पूर्ण जगत में मानव भिन्नता में ऐक्य, प्रकृति भिन्नता में ऐक्य, धर्म भिन्नता में ऐक्य, निज 'स्व' का सार्वभौमिक 'स्व' में ऐक्य कराता है। इतना ही नहीं यह जीव की भद्रता, मनोवृत्ति की श्रेष्ठता और जीवन में शांति व समरूपता को पुष्ट करने वाला विचार है। यह मानव मस्तिष्क में आदर्श जीवन, प्रकृति और लौकिक भावना की गहरी समझ विकसित करता है।

सन्दर्भ सूची

1. आधुनिक चिन्तन में वेदान्त, डॉ0 महेन्द्र शेखावत, पृष्ठ–23
2. The Complete works of Swami Vivekananda, Vol-2, Page-291
3. Ibid. Page- 358
4. Ibid. Page- 291
5. Ibid. Vol-3, Page- 245
6. Ibid. Vol-3, Page- 245
7. Ibid. Vol-3, Page- 245
8. Ibid. Vol-3, Page- 245
9. Ibid. Vol-2, Page- 305
10. Ibid. Vol-2, Page- 295
11. Ibid. Vol-2, Page- 295
12. Ibid. Vol-2, Page- 305
13. Ibid. Vol-2, Page- 305
14. Ibid. Vol-2, Page- 305
15. Ibid. Vol-2, Page- 300
16. Ibid. Vol-2, Page- 291
17. Ibid. Vol-2, Page- 293
18. Ibid. Vol-5, Page- 183
19. न हि कश्चिद् क्षणमपि जातु तिष्ठति अकर्मकृता।। गीता 3.5
20. Ibid. Vol-5, Page- 8.9